एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास।
जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास।। ११७ ।।

इसी मोमिन की जमात को खासलखास आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात कहा है। इनकी सिफत आयतों और हदीसों में जगह-जगह लिखी है। यह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं, जो परमधाम में रहते हैं।

नूर–अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल-सैयन-मिन्नूरी।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी।। ११८ ।।

इन्हीं को श्री श्यामाजी महारानी ने अपने नूर के अंग बताया है और अपने को खुदा के नूर का अंग बताया है। इन मोमिनों का दावा झूठी अक्ल वाले लिए बैठे हैं। जरा इनकी अक्ल पर विचार करो।

महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर।। ११९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं और ब्रह्मसृष्टियां श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं। झूठी दुनियां वालों ने जो इनका दावा ले रखा है, वह सच्चाई से सदा बहुत दूर रहते हैं।

ताथें जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत।। १२० ।।

इसलिए जो कुछ कुरान में कहा था, वह सब सारी महिमा आखिर में आने वाले मोमिनों के लिए है। जिनके दिल झूठे हैं और जिनको मारफत का ज्ञान नहीं मिला, वह इस बात को कैसे समझें?

जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना।। १२१ ।।

जब तक कुरान के ऊपरी अर्थ को लेंगे, तब तक वह मिटने वाले संसार को नहीं छोड़ सकते। श्री राजजी और श्री श्यामाजी की पहचान के बिना दुनियां सपने की तरह नष्ट हो जाती है।

महामत कहे मोमिनों पर, बरसत बदली नूर।
हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर।। १२२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के ऊपर श्री राजजी महाराज की मेहर की बरसात होती है। उन्होंने मामिनों के लिए परमधाम के दरवाजे खोल रखे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २५५ ।।

बाब तीनों गिरोके फैल हाल मकान

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जब तक अखण्ड परमधाम के दरवाजे नहीं खोले, तब तक मिटने वाले दुनियां के लोग अन्धकार में ही भटकते रहे। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने मारफत के ज्ञान से अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया और मोमिनों के वास्ते परमधाम के दरवाजे खोल दिए।

Nijanand App

पेहेले सरत करी महंमदें, हक हम आवेंगे आखिर।
द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत फजर।। २ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने पहले से ही मुहम्मद साहब से वायदा किया था कि हम आखिर के वक्त में आएंगे और अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर ज्ञान का सवेरा करके सबकी सिफायत करेंगे।

तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन।
जब मुआ सबोंका सैतान, तब आया सबों आकीन।। ३ ।।

उस समय ही सब दुनियां पाक (साफ) होकर एक दीन एक पारब्रह्म की पूजक बनकर निजानन्द सम्प्रदाय में आ जाएगी। जब सबके दिलों से शैतान हट जाएगा, तब सबको यकीन आ जाएगा।

इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए।
करें मोमिनात मोमिन सिजदा, कराए इस्कें खुदी उड़ाए।। ४ ।।

फिर अखण्ड परमधाम का तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान कराकर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी कयामत करेंगे और मोमिनों के अहंकार को इश्क से समाप्त कर खुदा पर सिजदा कराएंगे।

देखा देखी का सिजदा, किया होवे जिन।
कह्या हाड़ पीठका सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन।। ५ ।।

मोमिनों के देखा-देखी जो निजानन्द सम्प्रदाय में आएंगे, उनकी पीठ की हड्डी सींग के समान कड़ी हो जाएगी और वह नीचे झुक नहीं सकेंगे।

कह्या चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए।
कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए।। ६ ।।

कुरान में लिखा है कि उनकी पीठ की चमड़ी भले फट जाएगी, परन्तु सिर नहीं झुकेगा। उनकी छाती शेर के समान कठोर और गर्दन मुर्गे के समान अहंकार से भरी होगी, जो उनकी पीठ की हड्डी और चमड़ी को तोड़ेगी।

हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन।
असौं भिस्तों हद अपनी, करे कयामत उठाए बका तन।। ७ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज सबको जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान कराकर परमधाम के दरवाजे खोलेंगे। दुनियां के जीवों को बहिश्तों में पहुंचाकर कयामत के समय मोमिनों को परमधाम में उठा लेंगे।

लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे।
दई पातसाही बनी इस्माईल को, लईबनी असराईल से छिनाए।। ८ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि खुदा जो चाहे, वह कर सकता है। खुदा ने बनी असराईल (मेहराज ठाकुर) से जाहिरी गद्दी लेकर बनी इस्माईल (श्री बिहारीजी) को दे दी।

और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन।
सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अर्स तन।। ९ ।।

कुरान की आयतों और हदीसों में लिखा है कि जिन मोमिनों के असल तन अर्श (परमधाम) में हैं, खुदा के वही नजदीकी होंगे और खुदा को वही समझेंगे।

Nijanand App

जेता कोई हक अर्स दिल, सो कहे मरद मोमिन।
सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन।। १० ।।

जिनके ही दिल में श्री राजजी महाराज का अर्श है, उनको ही मर्द मोमिन कहते हैं। जागृत बुद्धि के ज्ञान से अपनी आत्मा की नजर खोलो और उन्हें पहचानो।

रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अर्स बका वतन।
याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हकें सुकन।। ११ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज सब परदे खोलकर अपने निज घर (परमधाम) में ले लेंगे। श्री प्राणनाथजी महाराज उन्हीं वायदों की याद दिला रहे हैं।

कहे अव्वल उतरते रूहों को, रदबदल है जेह।
सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह।। १२ ।।

परमधाम से उतरते समय रूहों को रदबदल (वार्तालाप) के समय जो वायदे किए थे, वह सब आयतों, हदीसों और सूरतों में लिखे हैं। यह इस बात की गवाही देते हैं।

खोल्या नूर पार इमामें, अर्स अजीम बका द्वार।
कराया सिजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार।। १३ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने अक्षर पार परमधाम के दरवाजे खोल दिए और मोमिनों को इश्क तथा पूरा प्यार देकर श्री राजजी महाराज के सामने सिजदा कराया।

हक हजूर रूहों ने, लई सिजदे बड़ी लज्जत।
किया रूहों हैयाती सिजदा, ए आखिरी इमामत।। १४ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की इमामत से मोमिनों को पारब्रह्म का दर्शन हुआ और उन्होंने पारब्रह्म के चरणों में मूल-मिलावा में प्रणाम कर सुखों को प्राप्त किया।

देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे।
उमतें किया सिजदा, खोल अर्स बका द्वारे।। १५ ।।

कुरान के उन्तीसवें सिपारे की आयतों में और हदीसों में इस गवाही को देखो, जहां लिखा है कि मोमिनों ने परमधाम के दरवाजे खोलकर श्री राजजी महाराज के चरणों में सिजदा बजाया।

कहूं हुकमें साहेदी, जो हकें फुरमाई।
सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह गवाही श्री राजजी के हुकम से ही मैं दे रही हूं। जो श्री राजजी महाराज ने कहा था, वह बातें आयतों और हदीसों में देखो तो तुम्हारे दिल के संशय मिटकर पहचान हो जाएगी।

सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम।
ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम।। १७ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने श्री राजजी के चरणों में मोमिनों को सिजदा कराया। यह खासलखास रूहें श्री राजजी महाराज के आशिक हैं और प्रतिपल उनके चरणों पर ही कुर्बान हैं।

Nijanand App

एते दिन अर्स-अजीम का, किन कह्या न एक हरफ।
अबलों चौदे तबक में, पाई न काहू तरफ।। १८ ।।

इतने दिन तक परमधाम का किसी ने एक हरफ नहीं बताया और न ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी को अखण्ड घर की दिशा का ही पता चला।

ए हरफ सो केहेवहीं, जो रूह बका की होए।
नूर बूंदें महंमद की, और क्यों कर लेवे कोए।। १९ ।।

अब जो अखण्ड परमधाम की रूहें हैं वही वहां का बयान करेंगी। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी की बूंदें दूसरा कोई कैसे ले सकता है?

देखो दिल विचार के, हदीसें कुरान।
दिल हकीकी अर्स तन बिना, होए नहीं पेहेचान।। २० ।।

कुरान और हदीसों के ज्ञान को दिल से विचार करके देखो। जब तक दिल हकीकी नहीं होंगे या जिनके परमधाम में तन नहीं होंगे, इस वाणी की पहचान उनको नहीं हो सकती।

लिख्या सबों किताबों, हद ऊपर सुकन।
ए जानें सब अर्स दिल, जो लदुन्निएं किए रोसन।। २१ ।।

सभी धर्मशास्त्रों मे बेहद की वाणी इशारे में लिखी है। जिनका दिल श्री राजजी महाराज का अर्श हो गया है, तारतम वाणी से यह ज्ञान की बातें वही समझ सकते हैं।

तीन ठौर गिरो तीन के, बेवरा देखो दिल ल्याए।
एक आम दूजे नूरी फरिस्ते, गिरो जित महंमद पोहोंचे जाए।। २२ ।।

सृष्टि तीन ठौर की है और तीन तरह की जमातें हैं, जिसका विवरण दिल से समझो। एक आम खलक जीवसृष्टि है। दूसरी नूरी फरिश्ते ईश्वरीसृष्टि है। तीसरी जमात ब्रह्मसृष्टि मोमिनों की है, जो परमधाम में रहती है और जहां मुहम्मद साहब पहुंचे थे।

सरीयत तरीकत हकीकत, और हक मारफत।
इन चारों की बिने इसलाम, जुदी जुदी कही जुगत।। २३ ।।

शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारफत ज्ञान की चार सीढ़ियां कही हैं, जिनकी अलग-अलग युक्तियां हैं।

इन चारों की बिने इसलाम, जो हादी न देवें बताए।
तब लग अपने मकान को, क्यों कर पोहोंचे जाए।। २४ ।।

इन चारों के अलग-अलग नियम हैं। जब तक इनके भेद श्री प्राणनाथजी नहीं बता देते, तब तक यह तीनों सृष्टियां अपने-अपने घर को कैसे जा सकती हैं?

सरीयत बीच रात के, अमल चलाया नेक।
मुसरक होने ना दिया, हक कह्या एकका एक।। २५ ।।

अज्ञान के अंधेरे में शरीयत का ज्ञान रसूल साहब ने चलाया। उन्होंने मूर्तिपूजा बन्द कर 'खुदा एक है' ऐसा कहा।

Nijanand App

पांच बिने इसलाम की, दुनी सिर करी फरज।
दिल मजाजी यों जानत, हम देत पीछला करज।। २६ ।।

दुनियां के जीवों के ऊपर उन्होंने फर्ज अदा करने के लिए धर्म के पांच कानून बनाए। झूठे दिल वाले जीवसृष्टि यह जानते हैं कि इस तरह के पांच नियम पालन कर हम पिछला कर्जा चुका रहे हैं।

किन किन लई तरीकत, पर कोई जाए न सक्या बीच दिन।
ना खुली हकीकत मारफत, तो क्यों पावे फजर रोसन।। २७ ।।

उनमें किसी-किसी ने तरीकत का ज्ञान ग्रहण किया। वह भी दिन के उजाले में नहीं आ सके। उन्हें हकीकत और मारफत के भेद नहीं खुले तो ज्ञान का सवेरा कैसे होगा?

सरीयत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद।
तरीकत पोहोंचे मलकूत लों, आगे होए न बका मकसूद।। २८ ।।

इस्लाम की शरीयत शरीर को पाक करती है और तरीकत के ज्ञान से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। इसके आगे अखण्ड की प्राप्ति नहीं होती।

बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातून रूह नजर।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फरिस्तों फजर।। २९ ।।

इस्लाम में हकीकत के ज्ञान से रूह की बातूनी नजर खुलती है। इससे अखण्ड अक्षरधाम तक पहुंचा जा सकता है, जहां फजर के समय ईश्वरीसृष्टि जाएगी।

इसलाम बिने हक मारफत, पोहोंचावे तजल्ला नूर।
ए मकान आसिक रूहों, गिरो खासलखास हजूर।। ३० ।।

इस्लाम में श्री राजजी की मारफत का ज्ञान नूरतजल्ला (परमधाम) में पहुंचाता है। यही आशिक रूहों की जगह है, जहां यह खासलखास रूहें राजजी के सामने रहती हैं।

इत इस्क बिना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत।
इलम लदुन्नी फुरमाए से, पोहोंचे अर्स बका खिलवत।। ३१ ।।

इस अखण्ड घर परमधाम में श्री राजजी, श्री श्यामाजी के सम्बन्ध बिना तथा इश्क के बिना नहीं पहुंचा जा सकता। तारतम वाणी के ज्ञान से मोमिन अखण्ड घर मूल-मिलावा में पहुंचे।

मोमिन मुस्लिम मुनाफक, बिन ईमान सोई हैवान।
ए आखिर हिदायत हादी बिना, पोहोंचे न अपने मकान।। ३२ ।।

मोमिनों की, फरिश्तों की और जीवसृष्टि की हकीकत बताई। जिनके अन्दर ईमान नहीं है, वह सभी जानवर हैं। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना यह अपने-अपने घरों को नहीं जा सकते।

खासलखास गिरो रुहें, अर्स अजीम सूरत हक।
और गिरो खास फिरस्तों, रहें नूर मकान बुजरक।। ३३ ।।

रूहों की जमात खासलखास कही है। यह श्री राजजी महाराज के अंग हैं और परमधाम के रहने वाले हैं। दूसरी जमात खास ईश्वरीसृष्टि को खास लिखा है, जो अखण्ड अक्षरधाम की रहने वाली है।

Nijanand App

कुंन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम।
जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम।। ३४ ।।

कुंन कहने से जो सृष्टि कही है वह आम खलक है। यह निराकार से पैदा है। यही तीसरी सृष्टि की सारी दुनियां है।

जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल।
सो दिल हकीकी मोमिन मिने, कबहूं ना सके मिल।। ३५ ।।

यह निराकार से पैदा जो जीवसृष्टि है, उनके दिल झूठे मजाजी हैं। यह हकीकी दिल मोमिन से कभी नहीं मिल सकते।

सिपारे इकईसमें, लिख्या जाहेर बंदगी बयान।
पर हादी देखाएं देखिए, मोमिन करें पेहेचान।। ३६ ।।

कुरान के इक्कीसवें सिपारे में इस तरह की बंदगियों का स्पष्ट बयान है, पर हादी श्री प्राणनाथजी जब बताएंगे तभी मोमिन पहचान कर सकेंगे।

राह रूहानी बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत।
सो हादी देखाएं देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत।। ३७ ।।

हकीकत के ज्ञान के बिना बातूनी रहस्य और रूहों के रास्ते की जानकारी नहीं होती। श्री प्राणनाथजी महाराज के दिखाने से ही अखण्ड परमधाम की छिपी बातें जाहिर होती हैं।

कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत।
आगूं एक हकीकत, दोए बका मारफत।। ३८ ।।

कुरान में छः तरह की नमाज का वर्णन आया है। जिनमें दो शरीयत की, एक तरीकत की, एक हकीकत की और दो अखण्ड मारफत की हैं।

तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी।
दूजी पाक करत है, वजूद जिसमानी।। ३९ ।।

इनमें तीन नमाजों का ब्यौरा यह है। पहली नमाज से इन्द्रियां वश में की जाती हैं। दूसरी शरीयत की नमाज शरीर को पाक करती है।

दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए।
दिल मजाजी जुलमत लों, आप अकल न छोड़े कोए।। ४० ।।

तरीकत की बन्दगी तीसरी है जो दिल से की जाती है, जिससे पाक होकर बैकुण्ठ पहुंचते हैं। झूठे दिलवाले निराकार तक जा सकते हैं। वह अपनी अक्ल से हद को नहीं छोड़ सकते।

अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत।
करत निमाज जबरूत में, बीच बका फरिस्ते पोहोंचत।। ४१ ।।

बाकी तीन नमाजों के भेद हकीकत से खोल रही हूं। हकीकत की नमाज से अक्षरधाम (फरिश्तों) तक पहुंचा जाता है।

Nijanand App

बंदगी रूहानी और छिपी, जो कही साहेदी हजूर।
ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर।।४२ ।।

रूहानी और छिपी बन्दगी पारब्रह्म श्री राजजी के परमधाम की हुजूरी बन्दगी है। इन दोनों को मारफत की बन्दगी कहते हैं।

ए आसिक रूहें गिरो रबानी, बीच नूरतजल्ला माहें।
दई साहेदी महंमदें मेयराज में, जो हकें केहेलाई मसी जुबांएं।।४३ ।।

श्री राजजी महाराज की आशिक रूहें परमधाम में रहती हैं। यह उनकी बन्दगी है। इसकी गवाही रसूल साहब ने मेयराजनामा में दी है। श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) से भी वही कहलवाया।

एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब।
आगूं अर्स दिल मोमिनों, सो खोले जिन हादी खिताब।।४४ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान ही कुरान के सब रहस्यों को खोलने की कुंजी है। इन रहस्यों को मोमिनों के सामने श्री प्राणनाथजी महाराज ने खोला, क्योंकि उन्हें ही यह अधिकार प्राप्त था।

कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन।
हादी तीन सूरत आए बिना, काहू खोली नहीं बातन।।४५ ।।

रसूल साहब ने यह छः तरह की नमाज का रहस्य हदीस में कहा है, जो आज दिन तक किसी को पता नहीं चला। मुहम्मद की तीन सूरत बसरी, मलकी और हकी के बिना किसी ने आज दिन तक बातूनी भेद नहीं खोले।

अग्यारे सदी दस साल कम, तो लों खोल्या न पट कुरान।
पाक बिना मत छुइयो, ए दिल दे करो बयान।।४६ ।।

एक हजार नब्बे वर्ष तक कुरान के रहस्य नहीं खुले। कुरान में लिखा है कि बिना पाक हुए मुझे मत छूना।

सिपारे सत्ताईस में, लिख्या बीच फुरमान।
पाक बिना मत छुइयो, यों कहे हजरत कुरान।।४७ ।।

हजरत कुरान के सत्ताइसवें सिपारे में लिखा है कि जो दिल पाक नहीं है वह मुझे मत छूना।

अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने।
तो बोले जुदे जुदे आरिफ, जो सक है सबों में।।४८ ।।

आज दिन तक दुनियां भटकती फिरती थी। किसी को कुरान के रहस्यों का पता नहीं चला, इसलिए पढ़े-लिखे इलमी लोग अलग-अलग अर्थ करते रहे, क्योंकि सभी के अन्दर संशय थे।

और किए मुहककों माएने, जुदे जुदे दिल ल्याए।
तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए।।४९ ।।

और खोज करने वाले इलमी, ज्ञानी लोग भी अलग-अलग अपने दिल से अर्थ करते रहे। श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के छिपे रहस्यों को दुनियां के तुच्छ जीव कैसे जान सकते हैं?

Nijanand App

कह्या याही के तरजुमें, जो दिल घसे न छाती से।
अब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने।।५०।।

किसी के अनुवाद (टीका) में यह भी लिखा है कि जब तक दिल में चोट न लगे और दिल निर्मल न हो, तब तक कुछ नहीं होगा, पर फिर भी अभी तक यह रहस्य छिपे रहे। कोई जाहिर नहीं कर सका।

तब से परदा मुंह पर, रह्या हजरत मुसाफ के।
सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए।।५१।।

इसलिए लिखा है कि हजरत कुरान के मुंह पर ग्यारवहीं सदी तक परदा पड़ा रहा और कुरान के छिपे भेदों को कोई समझ नहीं सका।

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए।
बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक हक से होए।।५२।।

संसार के पानी और मिट्टी से दिल पाक नहीं होता। दिल पाक करने का कोई उपाय नहीं है। बिना पाक हुए कुरान को छूने का हुकम भी नहीं है। दिल पाक एक श्री राजजी महाराज की मेहर से ही होता है।

कह्या मुसाफ नजीक हक के, सो हक नजीक खोलाए।
नापाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए।।५३।।

कुरान को श्री राजजी महाराज के नजदीक कहा है, इसलिए इनके रहस्यों को वही खोल सकते हैं, जो श्री राजजी महाराज के नजदीकी हैं। दुनियां के नापाक इन्सान श्री राजजी के नजदीक आ नहीं सकते, इसलिए कुरान के रहस्यों को मोमिन ही खोल सकते हैं।

हादी मोमिनों बीचमें, पाइए हक इस्क ईमान।
ए पाकी हैं मोमिनों, होए खाली सोर जहान।।५४।।

श्री श्यामाजी और मोमिनों के अन्दर ही श्री राजजी का इश्क और ईमान है और यही मोमिन पाक साफ हैं। बाकी दुनियां वाले सब शोर मचाने वाले हैं।

पेहेला दीदार होए मोमिनों, बीच आखिरी पैगंमर।
ए मुसाफ कह्या आखिरी, देवे दीदार आखिर।।५५।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दर्शन पहले मोमिनों को ही होंगे। बाद में वह सारी दुनियां को दर्शन देंगे, ऐसा कुरान में कहा है।

बखत महंमद के उठने, और आवे अस्हाब।
तब सो खोले मुसाफ को, पोहोंचे लग कोसे नकाब।।५६।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी आएंगे। उनके साथ उनके मोमिन आएंगे और तब कुरान के रहस्य खुलेंगे, अर्थात् कुरान का घूंघट उठाएंगे।

ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत।
दिल पाक करो इन आबसें, मुसाफ तब मोंह देखावत।।५७।।

कुरान के छिपे रहस्य खोलकर जाहिर कर देंगे, क्योंकि इन्हें पारब्रह्म की मेहर प्राप्त है। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही अपने दिल को पाक करो और तब कुरान के दर्शन होंगे।

Nijanand App

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अर्स मोमिन दिल।
ना ऊपर तले दाएं बाएं, ए बतावें मुरसद कामिल।।५८।।

कुरान में लिखा है खुदा सेहेरग से भी मोमिनों के करीब है। वह मोमिनों के दिल में है। ऐसे योग्य पढ़ने वाले ज्ञान बतलाते हैं और कहते हैं कि खुदा ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं कहीं नहीं है। उसका अर्श मोमिनों का दिल ही है।

जब पट अपने मोंह से, किया मुसाफें दूर।
तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर।।५९।।

जब कुरान के मुख से परदा उठ गया, तब अखण्ड परमधाम और वहां की सब बातें जाहिर हो गईं।

जब मोंह मुसाफें खोलिया, तब पट न आड़े हक।
तब दीदार पावे दुनियां, जो हक इलमें हुई बेसक।।६०।।

जब कुरान के भेद खुल गए तो श्री राजजी महाराज के बीच कोई परदा नहीं रह गया। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान से दुनियां संशय रहित होकर पारब्रह्म के दर्शन करेगी।

दुनी तरफ न पावे हक की, और मुसाफ हुआ पास हक।
हक मुसाफ आड़े एक पट, सो पट उड़े देखे खलक।।६१।।

दुनियां को पारब्रह्म के ठिकाने का पता नहीं है। कुरान श्री राजजी महाराज के पास है। श्री राजजी महाराज के कुरान और दुनियां के बीच एक यही अज्ञानता का परदा है। जब यह परदा तारतम ज्ञान से उड़ेगा, तब दुनियां वालों को कुरान के छिपे रहस्यों की और श्री राजजी की पहचान होगी।

हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए।
ढूंढ्या अव्वल से अब लग, पर किन बका न रोसन होए।।६२।।

खुदा सेहेरग से नजदीक कहा गया है, परन्तु वह किस तरफ से है, कोई नहीं जानता। शुरू से आज दिन तक सब खोजते ही रह गए, पर किसी को अखण्ड घर की पहचान नहीं हुई।

सब सय फना कही, क्यों बका कह्या ढ़िग तिन।
जिमी बका अर्स ढ़िग फना, ए सक सुभे रही सबन।।६३।।

सारी दुनियां को नाशवान कहा है, तो अखण्ड घर उनके पास कैसे हो सकता है? परमधाम की सब जमीन अखण्ड है, तो परमधाम उनके नजदीक कैसे हो सकता है? यही संशय सब का बना रहा।

ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूं खोलाए।
अब हादिएं ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए।।६४।।

कामिल मुर्शिद (सतगुरु) मोमिनों के बिना इन रहस्यों को और कोई नहीं खोल सकता। अब हादी श्री प्राणनाथजी ने इस परदे को मोमिनों के लिए खोल दिया है, क्योंकि आखिरत का समय आ गया है।

मुसाफ उठया तो उत से, जो बिकर रही फुरकान।
याके वारस मसी मोमिन, जो कहे अहेल फुरमान।।६५।।

कुरान आज दिन तक कुंवारी थी। उसके वारिस श्री श्यामाजी और मोमिन के लिए पाक कुरान को मक्का से उठाकर जबराईल ले आया। इन्हीं मोमिनों को कुरान का वारिस कहा।

Nijanand App

तो जुदे जुदे कहे जंजीरों, देखो दाखले मिलाए।
पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए।। ६६ ।।

यह बातें अलग-अलग आयतों में लिखी हैं, जिनको पहचानने के वास्ते दिल को पाककर अलग-अलग आयतों को मिलाकर देखो।

मुईनुद्दीन ने भेजी हदीसें, देने मुरीद आकीन।
तालिब होए सो देखियो, करी जाहेर कुतबदीन।। ६७ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा ने अपने बन्दों को यकीन देने के वास्ते हदीसें भेज दीं। जो इसका ख्वाहिशमन्द हो, वह ध्यान देकर समझना। वह रहस्य कुतुबुद्दीन के नाम से जाहिर हुए ऐसा कुरान में लिखा है, अर्थात् यह किस्सा आखिर के वक्त का है। श्री प्राणनाथजी ने कयामतनामा का ज्ञान छत्रसालजी के नाम से जाहिर किया, ताकि सुन्दरसाथ को यकीन आ जाए।

कह्या हदीसमें रसूलें, स्वाल किया उमर।
सरा तरीकत हकीकत, तीनों की देओ खबर।। ६८ ।।

रसूल साहब के यार हजरत उमर ने रसूल साहब से कहा कि शरीयत, तरीकत और हकीकत का ज्ञान हमें दो। यह बात हदीस में लिखी है।

पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान।
निसां होए तालिब की, देखो अर्स दिल पेहेचान।। ६९ ।।

शरीयत, तरीकत और हकीकत के पांच नियम जाहिरी में बताए हैं। जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श किया है, वही इस जानकारी के खाहिशमन्द (इच्छुक) हैं। इसको पहचानकर उनको सन्तुष्टि हो जाएगी। (तोहीद, रोजा, नमाज, जकात और हज)।

कह्या उठें पैगंमर अस्हाब, एही आखिरी किताब।
खोलें बीच आखिरी उमत, जिन सिर आखिरी खिताब।। ७० ।।

आखिर के समय में पैगाम देने वाले मोमिन और ईश्वरीसृष्टि सब संसार में आएंगे और कतेब की आखिरी किताब कुरान के रहस्यों को इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज जिसको कुरान के रहस्यों को खोलने का अधिकार है, अपनी उम्मत मोमिनों के बीच खोलेंगे।

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन।
रात गुमराही कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन।। ७१ ।।

श्री प्राणनाथजी अक्षर नूर सागर की एक बूंद कुलजम सरूप साहेब सूर्य के समान चमकाकर सबकी अज्ञानता का अन्धकार हटाकर चौदह तबक में उजाला भर देगा।

हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर।
हक अर्स बका जाहेर किए, मिटी हवा तारीक देख जहूर।। ७२ ।।

कुलजम सरूप साहब की वाणी श्री प्राणनाथजी के दिल से जाहिर होगी, जिससे श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान होगी। इस ज्ञान के प्रकाश से निराकार की अज्ञानता का अन्धकार मिट जाएगा।

Nijanand App

तो कलाम अल्ला की आयतें, और हदीसें महंमद।
ए मोमिन देखें दिल अर्स में, ले मुसाफ मगज साहेद।।७३ ।।

तब कुरान की आयतों के छिपे रहस्य और मुहम्मद साहब की हदीसों को मोमिन ही अपने अर्श दिल में समझ लेंगे।

कहूं बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन।
सोई समझें हक इलमें, जिनमें इस्क आकीन।।७४ ।।

बाबा आदम (आदि नारायण) की औलाद में तीन तरह के लोग हैं जिनमें इश्क और ईमान है। जागृत बुद्धि के ज्ञान से वही कुरान के रहस्यों को समझ सकते हैं (जीव, ईश्वरी और ब्रह्म)।

कही एक गिरो पैदा जुलमत से, तिन के फैल हाल जुलमत।
सो दुनी बिन कछू न देखहीं, दुस्मन दिल पर सखत।।७५ ।।

एक जमात निराकार से (जीवसृष्टि) पैदा है। उसकी करनी और रहनी भी अन्धकार की है। उनके दिलों पर शैतान अबलीस (नारद) की सत्ता (कठोर हुकूमत) है, इसलिए इस जमात की नजर केवल दुनियांदारी की तरफ ही रहती है।

दूजी गिरो फरिस्तन की, भई पैदा नूर मकान।
उतरी लैलत कदरमें, सो ताबे न होए सैतान।।७६ ।।

दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि की है, जो अक्षर धाम से पैदा है। यह भी खेल में लैल तुल कदर की रात्रि में उतरी है, इसलिए यह शैतान अबलीस के अधीन नहीं रह सकती।

गिरो तीसरी नूर बिलंदसे, ताको कौल फैल हाल नूर।
रूहें अर्स दिल उतरीं लैलमें, करें हमेसा हक जहूर।।७७ ।।

तीसरी जमात परमधाम से आई हैं। उनकी कहनी, करनी और रहनी सब नूरी है। इनके दिल को ही अर्श कहा है। यह भी लैल तुल कदर की रात्रि में खेल देखने के लिए उतरी हैं, वरना यह सदा ही श्री राजजी महाराज के साथ रहती हैं।

कहे मोमिन नूर सूरतमें, जो बीच अर्स हमेसगी।
एक तन मोमिन अर्स में, दूजी सूरत सुपन की।।७८ ।।

परमधाम में मोमिनों की परआतम के नूरी तन हैं। मोमिनों का एक तन अर्श परमधाम में है और दूसरा तन संसार का है।

तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हक के।
किए अर्स तन से रूबरू, जो नूर बिलंद से उतरे।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज के यही खासलखास बन्दे कहे गए हैं। इनके लिए ही श्री राजजी महाराज को सेहेरग से नजदीक कहा है। यह मोमिन जो परमधाम से उतरे हैं, इनके अर्श दिल को, अर्थात् संसार के तन, आत्मा को परआतम के आमने सामने पहचान करा दी है।

Nijanand App

जाकी न असल अर्समें, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए।
वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकलमें न आवे सोए।। ८० ।।

जिसकी परआतम परमधाम में नहीं है, उसको श्री राजजी महाराज (हक) सेहेरग से नजदीक कैसे हो सकते हैं? संसार के जीव मिटने वाले हैं। वह अखण्ड से नहीं मिल सकते। यह बात उनकी समझ में भी नहीं आ सकती है।

हकें कह्या छबीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदों से अकरब।
वे मोमिन एक तन अर्समें, ताए सेहेरग से नजीक रब।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान के छब्बीसवें सिपारे में लिखा है कि मैं मोमिनों के नजदीक रहता हूं। मोमिनों का एक तन परमधाम में है, इसलिए खुदा सेहेरग से नजदीक है।

रुबरू होना अर्स तन से, इन फना वजूद नासूत।
नजीक न होए बिना अर्स तन, नूर लाहूत परे हाहूत।। ८२ ।।

संसार के यह झूठे शरीर परमधाम के अखण्ड तनों के सामने नहीं जा सकते। अक्षरधाम से परे परमधाम और परमधाम में मूल-मिलावा में विराजमान श्री राजजी महाराज के नजदीक मोमिनों के बिना और कोई नहीं जा सकता।

दुनी असल जिनों तारीकी, सो इलमें करो पेहेचान।
ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा ला मकान।। ८३ ।।

दुनियां जो मोह तत्व (जुल्मत) से पैदा है, उसकी पहचान ज्ञान से करो। उनके सेहेरग से नजदीक निराकार है।

नाहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए।
बका नींद उड़ें उठें अर्समें, फना नींद उड़े उड़ जाए।। ८४ ।।

मिटने वाली दुनियां अखण्ड मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकती। फरामोशी हटने पर मोमिन अखण्ड परमधाम में उठ खड़े होंगे और संसार का प्रलय हो जाएगा।

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठें अर्स वजूद।
कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद।। ८५ ।।

मोमिनों की जब फरामोशी टलेगी, तब उनके परमधाम की परआतम मूल-मिलावा में उठकर खड़ी हो जाएंगी। यह परमधाम में श्री राजजी महाराज के खासे बन्दे दरगाही कहे जाते हैं और उनके चरणों में ही सदा रहते हैं।

लिख्या है हदीस में, मोमिन असल अर्स माहें।
ताको मोमिन जिन कहो, जाकी असल अर्समें नाहें।। ८६ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में कहा है कि मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं। जिनके तन परमधाम में नहीं हैं, उनको मोमिन मत कहो।

Nijanand App

ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अर्स असल।। ८७ ।।

वेद कतेब में साफ लिखा है कि अपनी सांसारिक बुद्धि से वहां कोई नहीं पहुंच सकता। बिना श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी के सब संसार में भटकते रहेंगे। इनमें कुछ मोमिन भी होंगे, भले ही उनके तन परमधाम में हैं।

तो क्यों पोहोंचें दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत।
सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित।। ८८ ।।

जब मोमिन बिना वाणी के भटक सकते हैं, तो यह संसार के जीव जो मोह तत्व निराकार से पैदा हैं, जिनके दिल झूठे हैं, वह कैसे परमधाम तक पहुंच सकते हैं? जहां जबराईल नहीं जा सका, वहां श्री प्राणनाथजी के चाहे बिना कोई नहीं पहुंच सकता।

तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए।
ले तरीकत चल कोई न सक्या, गए पांउं पुल-सरातें कटाए।। ८९ ।।

इसलिए दुनियां के वास्ते अज्ञानता का अंधेरा कहा है और उनके ऊपर फर्ज बन्दगी लाद दी गई है। यह दुनियां वाले तरीकत के रास्ते पर भी नहीं चल सके और कर्मकाण्ड की तलवार से ही इनके पर कट गए।

तरीकत भी ले ना सके, सो रातै की बरकत।
जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आड़ी हवा जुलमत।। ९० ।।

अज्ञानता के कारण ही यह तरीकत की बन्दगी के रास्ते नहीं चल सके। कोई तरीकत की राह से चलकर यदि बैकुण्ठ पहुंच भी गया तो उसके आगे निराकार का आवरण आ गया।

ले हिसाब दई हैयाती, कह्या वास्ते महंमद नूर।
भिस्त तौ कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर।। ९१ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के अंग मोमिनों के वास्ते ही श्री प्राणनाथजी महाराज सबका हिसाब लेकर अक्षर की नजर के नीचे योगमाया में बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति देंगे।

खास गिरो फरिस्तन की, ए जो पैदा नूर मकान।
सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान।। ९२ ।।

ईश्वरीसृष्टि की जमात जो अक्षरधाम से पैदा है, वह भी श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से ईमान लाएंगे और अपने अखण्ड घर अक्षरधाम जाएंगे।

हक हकीकत मारफत, रूहें इस्कें राह लई जाए।
सो बिन चले पांउं हक बका, दई सेहेरग से नजीक बताए।। ९३ ।।

श्री राजजी महाराज की हकीकत और मारफत के ज्ञान का रास्ता मोमिन ही इश्क से लेंगे। वह बिना पांव के चले (बिना किसी कर्मकाण्ड) ही अखण्ड घर परमधाम पहुंच जाएंगे। श्री राजजी महाराज ने इनको ही सेहेरग से नजदीक कहा है।

Nijanand App

हक खासलखासों को, खेल देखावें लैल का।
नूर–तजल्ला बीचमें, खेल देखें बैठे बीच बका।। ९४ ।।

श्री राजजी महाराज अपने खासलखास मोमिनों को परमधाम के बीच बैठाकर लैल का खेल दिखा रहे हैं।

ए क्या जानें मजाजी दुनियां, जो तारीकी से पैदास।
वाके दाखले मिलावे आपमें, जो अर्स रूहें खासलखास।। ९५ ।।

जो दुनियां निराकार से पैदा है, वह झूठी दुनियां इन बातों के भेदों को क्या समझे। परमधाम की जो खासलखास रूहें हैं, इनके साथ संसार के जीव अपनी तुलना करते हैं।

आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले।
तो खासलखास खासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दे।। ९६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से आयतों, हदीसों से मायने देखो, तो खासलखास (मोमिन), खास (ईश्वरी सृष्टि) और आम खलक (जीवसृष्टि) इन तीनों की पहचान जाहिर दिखाई देगी।

हुकम हुआ तीनों गिरो को, कर महंमद हिदायत।
हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरीयत।। ९७ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी को हुआ कि तुम तीनों किस्म की सृष्टि को हिदायत करो। हकीकत से, तरीकत से और शरीयत से सबको पहचान कराओ।

खासलखासों दे हिकमत, ज्यों रहे न सुभेसक।
बिगर वास्ते पोहोंचें बीच, अर्स अजीम बका हक।। ९८ ।।

खासलखास जो ब्रह्मसृष्टि है उनको जागृत बुद्धि की हिकमत दो, जिससे उनको किसी प्रकार के संशय न रह जाए और वह बिना किसी रुकावट के अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने पहुंच जाएं।

तरीकत देखाओ खास दूजी को, केहे मीठी हलीमी जुबांन।
तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान।। ९९ ।।

दूसरी जो ईश्वरीसृष्टि है उसे तरीकत की राह दिखाओ। उनसे मीठा और नम्रता से बोलो। यह जमात भी तुम्हारे हुकम को नहीं टालेगी। इनको भी अक्षरधाम अखण्ड घर में पहुंचा दो।

और जिद कर आम खलक सों, वे तेरे सामी ल्यावें हुज्जत।
ताए समझाओ जिदसों, जो जाहेरी चले सरीयत।। १०० ।।

साधारण दुनियां के जीवों को बल से समझाओ। वह तुम्हारे सामने हमेशा झगड़ा करेंगे, इसलिए उनका इलाज लट्ठ (सखती) ही है। यह दिखाने के वास्ते शरीयत पर चलते हैं। धर्म का आडम्बर करते हैं।

लिखी तीनों की अकलें, और तासों पाए जो फल।
सो लिखी बीच आयतों मुसाफ, सो देखो मोमिन अर्स दिल।। १०१ ।।

इस तरह से तीनों की अक्ल का विवरण लिखा है। उससे जो फल मिलता है वही कुरान की आयतों में लिखा है। हे मोमिनो! तुम्हारे दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श किया है, इसलिए तुम इसे समझो।

Nijanand App

सरीयत तरीकत हकीकत, ए तीनों अहेल कुरान।
जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान।। १०२ ।।

शरीयत, तरीकत और हकीकत से मानने वाले तीनों अपने आप को कुरान का वारिस बताते हैं, परन्तु जिनको जैसे बुद्धि मिली, उन्होंने कुरान की वाणी को वैसा ही पहचाना।

जो आयत हब्बूनी हब्बहुंम, तिन किए तरजुमें तीन।
पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे आकीन।। १०३ ।।

कुरान की आयत हब्बूनी-हब्बहुंम का तीन प्रकार का अनुवाद है। उसमें लिखा है जिससे कुरान की वाणी को जिस रूप में पहचाना, उनको वैसा ठिकाना मिला, वैसा ही फल मिला और वैसा ही उनको यकीन आया।

बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन।
सो क्यों पावें दिल दुस्मन, बिना अर्स दिल मोमिन।। १०४ ।।

श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की बातें कुरान की आयतों और हदीसों में लिखी हैं, जिसकी जानकारी उन मोमिनों को ही हो सकती है, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श किया है। जिनके दिल पर शैतान (दुश्मन अबलीस) की बादशाही है, वह इस रहस्य को नहीं समझ सकते।

बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल।
मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल्ल अकल।। १०५ ।।

बिना श्री राज श्यामाजी के सम्बन्ध के परमधाम में कोई घुस नहीं सकता। जब श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि दें, तभी कुरान के भेद समझे जा सकते हैं।

लिख्या सिपारे तीसरे, इबराहीम पूछा हक से।
ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठें।। १०६ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि इब्राहीम ने खुदा से पूछा कि यह दुनियां वाले मरते जाते हैं, तो यह मुर्दे किस तरह से उठेंगे?

तब लिख्या आया आयतमें, बाजे पैदा कलमें कुंन।
एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे दो हाथन।। १०७ ।।

तो ऊपर से आयत उतरी। कुछ लोग कुंन शब्द कहने से पैदा हुए हैं। एक सृष्टि एक हाथ से तथा दूसरी को दो हाथ से बताया है।

एक गिरो इसदाए से, मौजूद से ले आए।
दूजी गिरो खिलकत और से, इनों वास्ते करी पैदाए।। १०८ ।।

एक जमात शुरू से ही है, जिसे परमधाम से उतारा है। एक जमात और ईश्वरीसृष्टि है जो मोमिनों के वास्ते पैदा की है।

ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए।
एक कुंन दूजे पाक फरिस्ते, तीसरी असल खुदाए।। १०९ ।।

इस तरह से तीन प्रकार की सृष्टि के दृष्टांत को मिलाकर देखो। एक सृष्टि जीव है जो कुंन से पैदा हुई है। दूसरी पाक फरिस्तों (ईश्वरीसृष्टि) की है। तीसरी खुदा के ही तन ब्रह्मसृष्टि हैं।

Nijanand App

एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए।। ११० ।।

खुदा ने एक हाथ से रसूल मुहम्मद को बनाया। दूसरे दोनों हाथ से मलकी और हकी सूरत को बनाया। यह तीनों बसरी, मलकी और हकी को खुदा ने अपने हाथ से बनाया है (ऐसा कुरान के तीसरे सिपारे तिलकर रसूल में आया है)। अब यह दोनों सूरत बसरी, मलकी, तीसरी सूरत हकी में आकर मिल गईं और एकाकार हो गईं।

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें।
देखो सहूर कर मोमिनों, कह्या आदम पैदा हाथ से।। १११ ।।

कोई पूछे कि यह खुदा ने हाथ से बनाया है, ऐसा कहां लिखा है। मोमिनो! इसे कुरान के तेईसवें सिपारे में विचार करके देखो, जहां आदम के पुतले को हाथ से बनाने का आदेश अजाजील को दिया।

महामत कहे हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए।
दो गिरो पोहोंचाई दोऊ असों में, औरों पट खोले भिस्त आठों के।। ११२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से मैंने थोड़ा सा यह विवरण कहा है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को परमधाम और अक्षरधाम में जाने के लिए दरवाजे खोल दिए। बाकी सब जीवों के लिए आठ किस्म की बहिश्तें कायम कर दी हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ३६७ ॥

बाब तीनों फरिस्तों का बयान

तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान।। १ ।।

कुरान के अन्दर तीन बड़े फरिश्तों का विवरण लिखा है। हादी श्री प्राणनाथ जी महाराज मोमिनों के वास्ते हकीकत और मारफत के भेद खोलकर बता रहे हैं।

बयान बड़े बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात।
एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात।। २ ।।

इन तीन फरिश्तों की हकीकत बहुत ज्यादा है। यह अलग-अलग ठिकानों में कही गई है। जिनका एक-दूसरे के साथ मीजान (जोड़) करके विवरण किया जाए तो कागज में लिखा नहीं जाएगा।

जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कई किताब।
जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने कई धर्मशास्त्र अलग-अलग हकीकत की गवाहियों के वास्ते भेजे हैं। जिससे पढ़े हों या अनपढ़े, दोनों को जल्दी से जानकारी मिल जाए।

छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हकें फुरमाए।
त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने कुरान के जो भेद छिपाकर रखे हैं, उनको मैं जाहिर करती हूं। उनका निरूपण (स्पष्ट, प्रकाश) कर ऐसा जाहिर करूंगी, जिससे सब छोटे-बड़ों को समझ में आ जाए।

Nijanand App